20-02-2001 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

शिव जयन्ती - व्रत लेने का और सर्व समर्पण होने का यादगार है

आज त्रिमूर्ति रचता शिव बाप अपने पूज्य शालिग्रामों से मिलने आये हैं। मिलना भी है तो आज मनाना भी है। आप सभी विश्व के चारों ओर से बापदादा की जयन्ती बड़े उमंग-उत्साह से मनाने के लिए पहुँचे हो। बच्चे कहते हैं बाप की जयन्ती मनाने आये हैं और बाप कहते हैं बच्चों की जयन्ती मनाने आये हैं। आप सब भी अपनी जयन्ती अलौकिक बर्थ डे मनाने के लिए आये हैं। सारे कल्प में ऐसा न्यारा और प्यारा बर्थ डे कभी होता नहीं है। सारे कल्प में देखा है, ऐसा बर्थ डे मनाया है, जो बाप का भी हो और साथ में बच्चों का भी हो? क्योंकि विश्व परिवर्तन के कार्य में शिव बाप ब्रह्मा दादा के साथ-साथ ब्राह्मण भी जरूर चाहिए। ब्राह्मणों के बिना यज्ञ सफल नहीं होता है। इसलिए बाप और बच्चों का इकट्ठा जन्म दिन है अर्थात् जयन्ती है। तो बच्चे दिल ही दिल में बाप को मुबारक दे रहे हैं और बाप हर ब्राह्मण बच्चे को अलौकिक जन्म की अरब-खरब से भी ज्यादा दिल की दुआओं के साथ मुबारक दे रहे हैं। तो मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो! (सभी ने हाथ हिलाया) बहुत अच्छा- एक हाथ की ताली अच्छी लगती है, दो हाथ की नहीं। बहुत खुशी है ना, तो हाथ रूकते नहीं हैं, चल पड़ते हैं।

दुनिया में भक्त लोग भी शिव जयन्ती बड़े धूमधाम से मनाते हैं। लेकिन वह मनाते हैं एक दिन का जागरण वा एक दिन का व्रत। आप बच्चों ने अज्ञान नींद से जागरण का संकल्प एक दिन के लिए नहीं किया है, जागरण वह भी करते लेकिन आपने एक संगम युग का हीरे तुल्य जन्म जागरण किया है और कर रहे हैं। जाग गये हैं ना, अभी फिर सोयेंगे तो नहीं ना! या थोड़ा-थोड़ा सा सो जायेंगे! अच्छा, सोये नहीं तो थोड़ा झुटका खा लेंगे! यह जागरण ऐसा जागरण है जो स्वयं तो जाग जाते हैं लेकिन औरों को भी जगाते हैं। ज्ञान की जीवन में जागरण माना अन्धकार से रोशनी में आना। यह अलौकिक जागरण सभी को अच्छा लगता है ना! जब से जन्म लिया, जयन्ती मनाई तब से क्या-क्या व्रत लिया? याद है ना! बच्चे कहते हैं याद तो क्या, हमारी तो नेचुरल जीवन ही ‘व्रत’ की हो गई। पवित्र आहार, पवित्र व्यवहार और पवित्र विचार यह जीवन बन गई। एक मास के लिए, दो मास के लिए नहीं, जीवन ही व्रत धारण करने वाली बन गई। नेचुरल बन गई और नेचर बन गई। पवित्रता की नेचर बन गई है ना! नेचर बन गई है या बनानी पड़ती है? बन गई है ना? सिर्फ कांध हिलाओ बस। बन गई? अपवित्रता नेचर से समाप्त हो गई और पवित्रता जीवन में समा गई। ऐसी हीरे तुल्य शिव जयन्ती वा शालिग्राम जयन्ती मना ली। चारों ओर के देश-विदेश के बच्चे भी साथ-साथ मना रहे हैं। बापदादा देख रहे हैं कि चारों ओर बाप के साथ और आपके साथ वह भी कितने खुश हो रहे हैं।

आज के दिन विशेष भक्त लोग आपका यादगार बलि भी चढ़ाते हैं। आप सब मन-वचन-कर्म से बाप के आगे समर्पण होते हो, उसी का यादगार भक्त लोग अपने को बलि नहीं चढ़ाते, बकरे को बलि चढ़ा देते हैं। और कोई नहीं मिला, बकरा ही क्यों मिला? इसका भी रहस्य आप जानते हो, क्योंकि सबसे बड़े ते बड़ा देह-अभिमान का कारण है ''मैं पन''। यह ''मैं पन'' जब अर्पण कर लेते हो तब ही ब्राह्मण बनते हो। तो बकरा भी क्या करता है? में, में... तो यह देह-अभिमान के मैं-पन की निशानी है और देह-अभिमान का मैं-पन बहुत सूक्ष्म भी है और भिन्न-भिन्न प्रकार का भी है। सबसे पहला मैं पन है - मैं शरीर हूँ, फलाना हूँ। फिर आगे चलो तो सम्बन्ध में फंसने का भी भिन्न-भिन्न मैं-पन है। और आगे चलो तो भिन्न-भिन्न पोजीशन का भी मैं-पन है। उससे भी सूक्ष्म अपनी विशेषता का मैं-पन ऊपर से नीचे ले आता। विशेषता हर एक में है, ऐसी कोई भी मनुष्य आत्मा नहीं है जिसमें चाहे स्थूल, चाहे सूक्ष्म कोई भी विशेषता न हो, यह नहीं। ज्ञानी जीवन में भी हर ब्राह्मण के अन्दर कम से कम एक विशेषता अवश्य है, लेकिन ज्ञानी जीवन में विशेषता परमात्म देन है, परमात्मा की सौगात है। जब परमात्मा की देन को देह-अभिमान वश मैं-पन में लाते हैं, मैं ऐसा हूँ, यह रॉयल अभिमान बड़े-ते-बड़ा 'मैं-पन' है। तो समर्पण तो हुए ही हैं लेकिन आगे क्या देखना है?

टीचर्स सभी अपने को क्या कहती हैं? समर्पण हैं ना! टीचर्स सभी समर्पण हैं? अच्छा-प्रवृत्ति में रहने वाले समर्पण हैं? हाँ या ना? पाण्डव समर्पण हैं? बहुत अच्छा मुबारक हो। आगे क्या करना है? समर्पण तो हो गये, बहुत अच्छा। अभी आगे यह चेक करना है, बतायें क्या? आप कहेंगे समर्पण तो हैं ना फिर क्या करना है? तो एक है समर्पण और आगे है -'सर्व समर्पण'। 'सर्व' में विशेष अन्डरलाइन है अपने मन-बुद्धि-संस्कार सहित समर्पण क्योंकि जितना आगे बढ़ते हो, पुरूषार्थ में तीव्रगति से कदम उठाते हो और उठा भी रहे हो लेकिन वर्तमान वायुमण्डल प्रमाण ब्राह्मण जीवन में भी मन और बुद्धि के ऊपर व्यर्थ का प्रभाव, बुरा नहीं, बुरा खत्म हुआ लेकिन व्यर्थ और निगेटिव का प्रभाव ज्यादा है, इसलिए यथार्थ और सत्य निर्णय करने की महसूसता शक्ति कम हो जाती है। समझ से महसूसता होती है - हाँ यह रांग है, यह ठीक नहीं है लेकिन एक है विवेक से महसूसता, दूसरा है दिल से महसूसता। अगर दिल से कोई भी बात को महसूस कर लिया तो दुनिया बदल जाए लेकिन स्वयं नहीं बदलेगा। और संस्कार, पुराने 63 जन्मों के होने के कारण नेचुरल हो गये हैं, जिसको दूसरे शब्दों में कहते हो 'यह 'गलती नहीं है लेकिन मेरी नेचर है'। तो पुराने संस्कार कुछ मिटते हैं, कुछ दब जाते हैं फिर निकल आते हैं। लेकिन सर्व समर्पण का अर्थ है - मन का भाव और भावना हर आत्मा के प्रति परिवर्तन हो जाए, जिसको बापदादा कहते हैं कैसी भी आत्मा हो, भिन्न-भिन्न तो होगी ही, कल्प वृक्ष है, वैरायटी नहीं हो तो शोभा नहीं लेकिन हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना। अशुभ भावना को भी परिवर्तन कर शुभ भावना रखना वा शुभ भावना देना। हर आत्मा

के प्रति शुभ कामना, यह अवश्य बदलेंगे। ऐसा नहीं कि यह तो बदलना ही नहीं है, उसके प्रति जज बनके जजमेंट नहीं दो, यह बदलना ही नहीं है। जब चैलेन्ज की है कि प्रकृति को भी परिवर्तन कर सतोगुणी बनाना ही है, बनाना ही है। बनेगी, नहीं बनेंगी - क्वेश्चन नहीं, बनाना ही है। 'ही' शब्द को अन्डरलाइन किया है। तो क्या प्रकृति बदल सकती है, आत्मा नहीं बदल सकती? आत्मा तो प्रकृति का पुरूष है। तो प्रकृति बदले, पुरूष नहीं बदले क्यों? तो वर्तमान समय यह मन-बुद्धि-संस्कार, स्व के परिवर्तन और सर्व के परिवर्तन - यही सेवा है।

सभी पूछते हैं - इस वर्ष में क्या करना है? तो डबल सेवा करनी है। एक तो स्व को सर्व समर्पण और इतना स्व को समर्पण करो जो आपका वायुमण्डल, आपका वायब्रेशन, आपका संग, आपका दिल का सहयोग, आपके दिल की दुआयें औरों को भी सहज परिवर्तन करने में सहयोग दें। इतना स्व परिवर्तन करना है। सर्व समार्पित करना है। एक यह सेवा और दूसरी है लोक सेवा, रिजल्ट में देखा है कि चारों ओर देश में, विदेश में, गांव में सभी ब्राह्मण बच्चों ने अब तक जो सेवा की है, बाप के मुहब्बत से की है, उसकी तो बापदादा बहुत-बहुत-बहुत मुबारक देते हैं। आगे क्या करना है? बापदादा ने देखा जो ब्राह्मण बने हैं, ब्राह्मणों की भी वृद्धि है और भी तीव्रगति की वृद्धि होनी है। लेकिन साथ में जो लोक प्रिय सेवा की है, भिन्न-भिन्न प्रोजेक्ट द्वारा सेवा हो रही है, वह बहुत अच्छी है। अभी भिन्न-भिन्न स्थानों पर सहयोगी आत्मायें अच्छी निमित्त बनी हैं। सहयोगी तो बहुत अच्छे हैं, एक कदम सहयोग का है, एक पांव तो बढ़ाया है लेकिन दूसरा पाँव है - सहजयोगी, कर्मयोगी। कर्मयोगी या सहजयोगी भी कुछ कुछ बन गये हैं, यह भी स्टेज दूसरी है। अभी ऐसी आत्मायें प्रैक्टिकल स्वरूप से स्टेज पर पार्ट बजायें। माइक स्टेज पर होता है ना! तो माइक बन सेवा की स्टेज पर प्रत्यक्ष स्वरूप में भी आयेंगे जरूर। आप माइट हो, वह माइक। जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त रूप में माइट है, और आप बच्चों को माइक बनाया, ऐसे आप माइट बनो और ऐसे माइक तैयार करो। हैं, बहुत अच्छे-अच्छे, उम्मींदवार फास्ट जाने वाले हैं, सिर्फ अब और ऐसी आत्माओं के कनेक्शन को बढ़ाने की आवश्यकता है। वह चाहते हैं क्या करें, कैसे करें, उन्हों को माइट बन विधि ऐसी सुनाओ जो लौकिक आक्युपेशन और अलौकिक सेवा दोनों का बैलेन्स रखते हुए लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट के लाइन में आ जाएँ। ऐसे हैं, प्रत्यक्ष होने हैं। सिर्फ कनेक्शन और करेन्ट दो, रूहानियत की करेन्ट, वायब्रेशन, वायुमण्डल की करेन्ट और विधि, जो निमित्त बनें कि बैलेन्स रखने वाली जीवन बहुत अच्छी और सहज है। ठीक है ना! क्या करना है, वह सुन लिया ना! छोटा-छोटा गुलदस्ता तो तैयार करो। चलो बड़ा गुलदस्ता नहीं, 5 फूलों का, 10 फूलों का गुलदस्ता तो लाओ। और हर एक तरफ बापदादा की नजरों में हैं। सुना! पाण्डव सुना? बहुत अच्छा। डबल फारेनर्स जम्प नहीं लेकिन उड़ रहे हैं, तो पहला गुलदस्ता विदेश लायेगा या भारत लायेगा? कौन लायेगा? कि दोनों साथ में लायेंगे? एक तरफ से फारेन का, एक तरफ भारत का, दोनों गुलदस्ते स्टेज पर आयेंगे। जैसे यह सेरीमनी मनाते हैं

तो वह भी सेरीमनी मनायेंगे, दोनों गुलदस्तों की, भारत की भी विदेश की भी। ठीक है? विदेश वाले क्या समझते हैं? ठीक है। तो दूसरी सीजन में लायेंगे? लाना है? भारत वाले लायेंगे? लौकिक और अलौकिक आक्युपेशन के बैलेन्स वाले। आप जैसे सिर्फ ब्राह्मण जीवन वाले नहीं, लौकिक भी अलौकिक भी, उन्हों का प्रभाव ज्यादा होगा। आप लोगों से तो दृष्टि लेने आयेंगे। अच्छा - क्या सोच रही है, जयन्ती?

नाम सोच रही है क्या? यह निर्मला, मोहनी नाम सोच रहे हैं ना! यहाँ पाण्डव देखो, भारत के पाण्डव कोई कम हैं, सुभानअल्ला हैं। यह देखो, कुछ-कुछ तो बैठे भी हैं। यह ब्रायन सामने बैठा है ना! (आस्ट्रेलिया के ब्रायन भाई से) गुलदस्ता तैयार करना है ना! बहुत अच्छे-अच्छे क्या नाम देते हो, एन. सी. ओ., अच्छा। फारेन के एन. सी. ओ. वाले हाथ उठाओ। एन. सी. ओ. बनना सहज नहीं है, कमाल करना पड़ेगा। कर सकते हैं कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि धरनी तैयार है। बीज भी पड़ा हुआ है सिर्फ पालना का पानी देना है। अभी बीज को पालना का पानी चाहिए। अच्छा।

बापदादा सभी बच्चों को देख खुश होते हैं, हर टर्न में आधी संख्या नयों की होती है, पहले बार की। तो यह वृद्धि की निशानी है ना। इस बारी भी जो पहले बारी आये हैं वह हाथ उठाओ। बहुत हैं। तो जो पहले बारी आये हैं उन विशेष आत्माओं को नये बर्थ डे मनाने की मुबारक हो। मधुबन में तो बर्थ डे आज ही मना रहे हैं, इस बारी मना रहे हैं। अच्छा है।

टीचर्स भी बहुत आई हैं। टीचर्स को भी मुबारक हैं। आपने ही तो सेवा की है ना! तो सेवा की मुबारक। अच्छा। गुजरात का क्या हाल है? हलचल गुजरात से शुरू हुई है। ज्यादा हलचल गुजरात और विदेश में भी थोड़ा-थोड़ा शुरू है। डरते तो नहीं हो ना! धरनी तो हिलती है लेकिन दिल तो नहीं हिलती है ना! जहाँ धरनी हिली है, नुकसान हुआ है वहाँ से जो आये हैं वह उठो। अहमदाबाद वाले भी उठो। अच्छा। दिल हिली कि धरनी हिली? क्या हुआ? दिल में थोड़ा ऐसा-ऐसा हुआ? नहीं हुआ! बहादुर हैं। बापदादा ने देखा कि बच्चों ने अपने हिम्मत और बाप की छत्रछाया से अच्छा अपना रिकार्ड रखा। कोई फेल नहीं हुआ, सब पास हो गये, कोई थोड़ा, कोई ज्यादा। नम्बरवार तो सब होता ही है हर जगह। लेकिन पास हैं। मुबारक हैं। सबसे ज्यादा नाजुक स्थान से कौन आये हैं? (एक भुज की और एक बचाऊ की बहन आई है) अच्छा, भुज में आप तो हजार भुजाओं वालों के साथ थे। अच्छा, पेपर में पास। बहुत अच्छा किया। आगे भी हिलना नहीं। अभी तो होता रहेगा। घबराना नहीं। (रोज होता है) होने दो। देखो परिवर्तन तो होना है ना! तो प्रकृति भी अपना काम तो करेगी ना! जब मनुष्य आत्माओं ने प्रकृति को तमोगुणी बना दिया, तो वह अपना काम तो करेगी ना। लेकिन हर खेल, ड्रामा के खेल में यह भी खेल है। खेल को

देखते हुए अपनी अवस्था नीचे ऊपर नहीं करना। मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं की स्व-स्थिति पर पर-स्थिति प्रभाव नहीं डाले। और ही आत्माओं को मानसिक परेशानियों से छुड़ाने के निमित्त बनो क्योंकि मन की परेशानी आप मेडीटेशन से ही मिटा सकते हो। डाक्टर्स अपना काम करेंगे, साइन्स वाले अपना काम करेंगे, गवर्मेन्ट अपना काम करेगी, आपका काम है मन के परेशानी, टेन्शन को मिटाना। टेन्शन फ्री जीवन का दान देना। सहयोग देना। जैसे वर्तमान समय देश विदेश वाले सहयोगी बन सहयोग दे रहे हैं ना! यह बहुत अच्छा कर रहे हैं। इससे सिद्ध होता है कि चाहे विदेश हो, चाहे कोई भी हो लेकिन भारत देश से प्यार है। हर एक अपना-अपना कार्य तो कर रहे हैं, आप अपना कर रहे हैं। जैसे आग लगती है तो आग बुझाने वाले डरते नहीं हैं, बुझाते हैं। तो आप सब भी मन के परेशानी की आग बुझाने वाले हो। अच्छा।

तो गुजरात मजबूत है ना! हजार भुजाओं की छत्रछाया में हो। कहाँ भी आये, अभी तो गुजरात को देखकर अनुभवी हो गये हो ना। कहाँ भी आये। देखो प्रकृति को कोई मना नहीं कर सकता है, गुजरात में आओ, आबू में नहीं आओ, बाम्बे में नहीं आओ, नहीं। वह स्वतन्त्र है। लेकिन सभी को अपने स्व-स्थिति को अचल-अडोल और अपने बुद्धि को, मन के लाइन को क्लीयर रखना है। लाइन क्लीयर होगी तो टचिंग होगी। बापदादा ने पहले भी कहा था उन्हों की वायरलेस है, आपकी वाइसलेस बुद्धि है। क्या करना है, क्या होना है, यह निर्णय स्पष्ट और शीघ्र होगा। ऐसे नहीं सोचते रहो बाहर निकलें, अन्दर बैठें, दरवाजे पर बैठें, छत पर बैठें। नहीं। आपके पांव वहाँ ही चलेंगे जहाँ सेफ्टी होगी। और अगर बहुत घबरा जाओ, घबराना तो नहीं चाहिए, लेकिन बहुत घबरा जाओ, बहुत डर लगे तो मधुबन एशलम घर आपका है। डरना नहीं। अभी तो कुछ नहीं है, अभी तो सब कुछ होना है, डरना नहीं, खेल है। परिवर्तन होना है ना। विनाश नहीं, परिवर्तन होना है। सबमें वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होनी है। रहमदिल बन सर्व शक्तियों द्वारा सकाश दे रहम करो। समझा!

सेवा का टर्न - ईस्टर्न, नेपाल, तामिलनाडु का है - तामिलनाडु वाले उठो। सभी पट्टा लगाकर खड़े हैं। अच्छा, हाल के सिक्युरिटी की ड्युटी है। अच्छी सेवा की और सेवा का फल खुशी मिली और वर्तमान व भविष्य के लिए बल भी मिला। तो सेवा का बल भी मिला और फल भी मिला। ठीक है ना! बहुत अच्छी सेवा की, मुबारक हो। नेपाल उठो - नेपाल ने क्या सेवा की? (सब्जी काटना, अनाज़ साफ करना) मेहनत का काम किया। देखो अगर सब्जी नहीं काटते तो सब खाते क्या! इसलिए बहुत अच्छी सेवा की और सेवा की दुआयें इतने ब्राह्मण आत्माओं की मिली। दुआयें जमा हो गई। सभी ने अपने दिल से सेवा की, यह रिकार्ड सबका अच्छा है। अच्छा, मुबारक हो।

ईस्टर्न - बंगाल, बिहार, उड़ीसा, आसाम.... बिहार वाले उठो, बिहार वालों ने कौन सी ड्युटी ली? (सिक्युरिटी)

अपनी भी सिक्युरिटी की ना! अपने स्व-स्थिति की भी सिक्युरिटी और शान्तिवन की भी सिक्युरिटी की। बहुत अच्छा किया। देखो सबकी शक्लें कितनी हर्षित हो रही हैं क्योंकि सेवा की झलक चेहरों पर आ गई है। बहुत अच्छा। उड़ीसा भी उठो - सबसे ज्यादा उड़ीसा है। उड़ीसा वालों ने क्या किया? (आवास निवास, रोटी, पानी, चाय, खाना खिलाना) उड़ीसा ने तो देखो चार चाँद लगा दिया, बहुत अच्छा किया। बहुत अच्छा। संख्या ज्यादा है इसलिए चार चाँद लगाये हैं। खुशी हुई ना। सेवा की कितनी खुशी हुई? बहुत हुई! आसाम उठो - आसाम में शक्ति सेना ज्यादा है। क्या ड्युटी ली? (ट्रांसपोट, वी.आई.पी भोजन आदि) अच्छा सबको ठीक पहुँचाया। ट्रेन से लाया और ट्रेन तक पहुँचायेंगे, आराम से पहुँचायेंगे। अच्छा किया। आसाम को बापदादा कहते हैं यह विशेष 'आसामी' हैं। आसाम नहीं, आसामी हैं। बहुत अच्छा। मुबारक हो। बंगाल - बंगाल ने क्या ड्युटी ली? (सफाई, दादी से मिलाना, धोबीघाट आदि) एक तरफ सफाई और दूसरे तरफ मिलाना, दोनों का कितना अच्छा मेल है। सफाई भी बहुत जरूरी और मिलाना भी जरूरी। देखो अपना घर समझकर ड्युटी बजाई, इसीलिए सफलता, सफलता, सफलता है। सफलता बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है। तो सफलता मिली ना! बहुत अच्छा।

अच्छा - अभी फारेन का कुमार ग्रुप - बहुत अच्छी भट्टी की। बहुत अच्छा लगा! कुमार कमाल करेंगे। कुमार जो चाहे वह कर सकते हैं। कर रहे हैं और आगे भी करेंगे। करना है ना! होशियार हैं सब। बापदादा चेहरों से ही देख रहे हैं कि सभी हिम्मत वाले हैं। हिम्मत की मुबारक हो, बहुत अच्छा। बापदादा ने देख लिया ना। अभी तो कम्पलेन नहीं होगी ना कि हमको कोई ने देखा नहीं। एक एक को देख लिया। अच्छी मेहनत की है।

अच्छा - बापदादा ने देखा। सुना नहीं देखा कि इस बारी डबल फारेनर्स ने साइलेन्स के बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव किये। सभी का सुन तो नहीं सकते हैं, लेकिन सुन लिया है। अच्छे उमंग-उत्साह से प्रोग्राम किया, और आगे भी अपने अपने देश में जाके भी यह साइलेन्स का अनुभव बीच-बीच में करते रहना। चाहे जितना समय निकाल सको क्योंकि साइलेन्स का प्रभाव सेवा पर भी पड़ता ही है। तो अच्छे प्रोग्राम किये। बापदादा खुश है। आगे भी बढ़ाते रहना। उड़ते रहना, उड़ाते रहना। अच्छा।

अभी एक सेकण्ड में मन और बुद्धि को एकाग्र कर सकते हो? स्टाप, बस स्टाप हो जाए। अभी एक सेकण्ड के लिए मन और बुद्धि को एकदम एकाग्र बिन्दु, बिन्दु में समा जाओ। अच्छा। (बापदादा ने ड्रिल कराई)

चारों ओर के सर्व श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं को, चारों ओर के सदा दृढ़ संकल्प का व्रत रखने वाले अचल आत्माओं को, चारों ओर के सर्व हिम्मत-हुल्लास से स्व सेवा और लोक कल्याण की सेवा करने वाले महान सेवाधारी आत्माओं को, आज के शिव जयन्ती की, हीरे तुल्य जयन्ती की, न्यारी और प्यारी जयन्ती की मुबारक हो, और

दुआओं के साथ यादप्यार और नमस्ते।

अच्छा - सभी के कार्ड और पत्र बहुत अच्छे-अच्छे आये हैं। बापदादा देख रहे हैं, यहाँ भी रखे हुए हैं और डबल फारेनर्स ने जो अपने दिल के पुरूषार्थ के पत्र लिखे हैं, वह सब बापदादा के पास पहुँच गये हैं। सभी के पत्र और भिन्न-भिन्न सजावट के बहुत सुन्दर दिल के विचार के उमंग-उत्साह के कार्ड मिल गये हैं। इसलिए दूर बैठने वालों को सबसे समीप, सामने देख यादप्यार और मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

आंध्रप्रदेश के चीफ मिनिस्टर भ्राता चन्द्राबाबू नायडु जी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्राबाबू नायडु से बापदादा की मुलाकात

बहुत अच्छा किया जो अपने गॉडली फैमिली में पहुँच गये। यह गॉडली फैमिली है ना! आप फैमिली मेम्बर हो ना! कि बाहर से आये हो? क्या हो? फैमिली मेम्बर हो? आप गेस्ट नहीं हो, गेस्ट हो क्या? होस्ट हो। गेस्ट नहीं हो। आपका ही घर है क्योंकि यह घर, परम-आत्मा का घर है तो सबका घर है ना! बापदादा को खुशी है क्योंकि बच्चे में एक विशेषता है। वह विशेषता है - हिम्मत। कोई भी कार्य करते हो तो हिम्मत से करते हो। और हिम्मत से स्वत: ही मदद मिलती है। हिम्मत कभी नहीं हारना चाहिए। हिम्मत परमात्मा के मदद के भी पात्र बना देती है। (मिसेज नायडू) यह भी हिम्मत वाली है, कम नहीं है। इसलिए थोड़ी बहुत खिट-खिट होते भी सफलता मिलती है, क्यों? दृढ़ता की चाबी आपके पास है। जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफलता है ही है। होगी या नहीं होगी का क्वेश्चन नहीं, है। बाकी वायुमण्डल के अनुसार थोड़ी बहुत बातें तो आनी ही हैं। लेकिन उन बातों को हिम्मत से साइडसीन समझके चलते रहो। अच्छा पार्ट बजाया है। अपनी स्टेट से प्यार अच्छा है। और यह आपकी साथी है। साथी हो ना! साथ देती हो ना! और यह सब कौन है? (सेक्रेट्री और सिक्युरिटी।) बहुत अच्छा।

बहुत भक्तों को भक्ति की राह दिखाई ना तो इसका फल भी मिलता है क्योंकि अच्छा कार्य है, बुरा कार्य नहीं है तो अच्छे कार्य का फल मिलता है - खुशी, हल्कापन। यह फल है। अच्छा है। वाह! सेक्रेट्री तो बहुत फेथफुल हैं, अच्छे हैं। देखो, सेक्रेट्री अगर मददगार नहीं हो ना तो कार्य सिद्ध नहीं होता। इसीलिए बलिहारी सेक्रेटीज की जो सहयोग दे रहे हैं। जो भी आये हैं।

अच्छा - आप बी.के. हैं? देखो, जगत का रचता कौन है? जगत का रचता ब्रह्मा है ना! वह तो मानती हो ना! स्थापना करने वाला ब्रह्मा, पालना वाला विष्णु और पुरानी दुनिया का विनाश करने वाला शंकर। तीनों का मालूम है ना! तो आप ब्रह्मा की रचना नहीं हो? ब्रह्माकुमार-कुमारी तो सभी हैं। रचता ही ब्रह्मा है तो बी.के. तो सभी हैं। सिर्फ

अभी ब्रह्मा बाप को थोड़ा पहचानना है, बस। बहुत अच्छा किया। देखो, आपने माइक बनने में अच्छा पार्ट बजाया है। माइक का अर्थ समझा ना! जो सेवा की स्टेज पर आने वाले हैं, बापदादा उन्हें माइक कहते हैं। तो अपनी एशेम्बली में सबको सन्देश देना, यह अपना फर्ज अच्छा पालन किया है। मानें नहीं मानें, चले नहीं चलें, लेकिन आपने अपना फर्ज पालन किया। यह पहला ही आपका एक्जैम्पुल है। इसीलिए बापदादा खुश हैं और साथियों पर भी खुश हैं। (सभी को आपने मेडीटेशन करने की प्रेरणा दी है) बापदादा ने सुना है। हिम्मत रखी ना। (इनका विजन है स्वार्णिम आंध्रा बनाना है) हाँ क्यों नहीं बनायेंगे, सारा स्वर्ण बनना ही है।

काल आफ टाइम में पधारे हुए मेहमानों से - आप सभी को यह अपना घर लगता है? अपना घर है? यह इतनी बड़ी गॉडली फैमिली कब देखी है? देखी है? नहीं देखी है। कितने भाग्यवान हो जो इतनी बड़ी गॉडली फैमिली में पहुँच गये। सभी का अनुभव अच्छा रहा और आगे भी इसी अनुभव को कनेक्शन द्वारा बढ़ाते रहना। कनेक्शन जरूरी है ना! जितना कनेक्शन रखते रहेंगे उतना अनुभव बढ़ता रहेगा। अभी आप मैसेन्जर बनके जा रहे हो। मैसेन्जर हो ना! मैसेन्जर हैं? जो मैसेज मिला वह मैसेज औरों को भी देकर टेन्शन फ्री लाइफ बनायेंगे। आज दुनिया में टेन्शन कितना है। तो आप टेन्शन फ्री अनुभव कर औरों को कराना। कराना है ना! अच्छा है। जो भी आये हो, वह विशेष हो। विशेषता है आपमें। अभी उसी विशेषता को कार्य में लगायेंगे तो और बढ़ती जायेगी। जैसे बीज में सब कुछ भरा हुआ होता है लेकिन जब तक धरनी में नहीं पड़ा है तो फल नहीं देता है, तो आप सबमें विशेषता का बीज है। अभी उसको कार्य में लगाना। तो आगे बढ़ते रहेंगे। ठीक है ना! अच्छा। इन्होंने सेवा की है। अच्छी सेवा की है। ग्रुप तैयार तो किया है और प्लैन भी अच्छा बनाया है। अच्छा। सब बहुत खुश हैं ना? अच्छा।

65 वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती पर बापदादा ने अपने हस्तों से शिव-ध्वज फहराया तथा सभी बच्चों को बधाई दी, मोमबत्ती जलाई, केक काटी

सभी ने यह झण्डा लहराया, हाथ थोड़ों के थे लेकिन आप सबके हाथ बाप के साथ थे। जो पीछे बैठे हैं उन्होंने भी सबके साथ झण्डा लहराया। सबके चेहरों से हर एक के दिल में बाप का झण्डा लहरा रहा है, यह शक्ल से दिखाई दे रहा है। तो दिल में झण्डा तो लहरा लिया है और कपड़े का झण्डा भी लहरा लिया है जगहजगह पर। अभी प्रत्यक्षता का झण्डा जल्दी-से-जल्दी लहराना ही है। यही व्रत लो, दृढ़ प्रतिज्ञा का व्रत लो कि जल्दी-से-जल्दी यह झण्डा नाम बाला का लहराना ही है। अभी दु:खी दुनिया को मुक्तिधाम में जीवनमुक्ति धाम में भेजो। बहुत दु:खी है ना तो रहम करो, अब दु:ख से छुड़ाओ। जो बाप का वर्सा है - 'मुक्ति' का, वह सबको दिलाओ क्योंकि परेशान बहुत हैं। आप शान में हो, वह परेशान हैं। कभी भी मन्सा सेवा से अपने को अलग नहीं करना, सदा सेवा करते रहो। वायुमण्डल

फैलाते रहो। सुखदाता के बच्चे सुख का वायुमण्डल फैलाते चलो। यही मनाना है। तो शिव-रात्रि मना ली! सबने मनाई, यहाँ वालों ने मनाई? कुर्सी वालों ने मनाई? पीछे वालों ने मनाई? इस तरफ वालों ने मनाई? गैलरी वालों ने मनाई? सबने मिलकर मनाई, सबको मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।